Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, MAR-APR, 2022, VOL- 9/70

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं का विश्लेषण

सर्वेश कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, बरेली कालेज बरेली

Paper Received On: 25 APR 2022

Peer Reviewed On: 30 APR 2022

Published On: 1 MAY 2022

Abstract

किसी भी देश की समृद्धि उसके नवयुवकों पर निर्भर करती है। जब तक उनकी शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं का पूर्ण विकास नहीं होगा, तब तक वह अपनी शक्तियों का पूर्ण उपयोग देश व समाज के हित के लिए नहीं कर सकते। बालक की व्यावसायिक आकांक्षा का ज्ञान प्राप्त कर उसमें निहित क्षमताओं को उचित दिशा में विकसित होने के अवसर प्रदान किये जा सकते हैं। व्यक्ति के अनुपयुक्त एवं अरूचिकर व्यवसाय में ठहरने पर आर्थिक हानि होती है, साथ ही साथ व्यक्ति के व्यक्तित्व का ह्रास भी हो जाता है। उपयुक्त व्यवसाय को अपनाने पर व्यक्ति को खुशी और संतोष प्राप्त होता है तथा उसका व्यक्तिगत विकास होता है। यदि व्यक्ति को अरूचिकर एवं अनुपयुक्त व्यवसाय में कार्य करना पड़ता है तो उसका जीवन निराशा में व्यतीत होता है। फलतः उसके व्यक्तित्व का ह्रास होता है। इस प्रकार व्यावसायिक आकांक्षा का ज्ञान प्राप्त कर किसी भी व्यक्ति को उपयुक्त व्यवसाय का चयन करने व व्यक्तित्व के पूर्णरूपेण विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। प्रत्येक व्यक्ति अंतःनिहित क्षमताओं को लेकर जन्म लेता है। उसकी रूचियॉं, अभिरूचियॉं, योग्यतायें, क्षमतायें भिन्न–भिन्न होती है। इन्हीं के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति अपने परिवार का भरण–पोषण करने और अपने जीवन को व्यवस्थित रूप से चलाने हेतु भिन्न–भिन्न व्यवसायों को प्राप्त करने की कामना प्रकट करता है एवं उन्हें प्राप्त करने के लिए प्रयासरत रहता है। अपनी रूचि के अनुसार व्यवसाय प्राप्त करने की यही कामना व्यावसायिक आकांक्षा कहलाती है। प्रस्तुत शोध–पत्र में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं का विश्लेषण किया गया है।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

शिक्षा के माध्यम से ही देश की प्रतिभा और संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग व्यक्ति, राष्ट्र एवं विश्व की भलाई के लिए किया जा सकता है। आज शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में व्यावसायिक कुशलता का विकास करना है। स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा गॉधी ने जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में उर्दू दीक्षांत समारोह में भाग लेते हुए कहा कि 'सिर्फ वही तालीम कायम रह सकती

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

है जो व्यावहारिक जीवन में तालमेल रखती हो। उपयोगिता के बिना केवल दिमागी ज्ञान से कोई लाभ नहीं है। शिक्षा का उद्देश्य यह होना चाहिए कि लोग शिक्षा में विभिन्न सिद्धांतों, उद्देश्यों एवं आदर्शों में अन्तर समझ सके। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे पिछड़े और निम्न वर्गों को लाभ मिल सके, साथ ही प्रतिभाशाली छात्रों को पूर्ण प्रोत्साहन मिल सके।'

आकांक्षा

लक्ष्य या मूल्य को प्राप्त करने की इच्छा आकांक्षा कहलाती है। इन लक्ष्यों और मूल्यों के प्रति व्यक्ति की इच्छा की तीव्रता को आकाक्षां स्तर कहते है। आकाक्षा स्तर से व्यक्ति के तात्कालिक लक्ष्य का संकेत मिलता है जिसे एक व्यक्ति प्राप्त करने के लिए प्रयास करता है।

आकांक्षा के प्रकारः

1) धनात्मक एवं ऋणात्मक– आकांक्षा धनात्मक आकांक्षा वह है जिसमें व्यक्ति सफलता प्राप्ति की ओर उन्मुख होता है। दूसरी ओर ऋणात्मक आकांक्षा वह है जिसमें व्यक्ति असफलता दूर करने का प्रयास करता है।
2) तात्कालिक एवं दूरगामी– आकांक्षा तुरन्त भविष्य (जैसे आज, कल, अगले सप्ताह या अगले महीने) के लिए निर्धारित लक्ष्य तात्कालिक आकांक्षायें हैं। जबकि भविष्य में (1 वर्ष या 5 वर्ष बाद) के लिए निर्धारित लक्ष्य दूरगामी आकाक्षायें है।
3) वास्तविक एवं अवास्तविक– आकांक्षा वास्तविक आकांक्षा वह है जो व्यक्ति की योग्यताओं के अनुकूल होती है। दूसरी ओर अवास्तविक आकांक्षा वह है जो व्यक्ति की योग्यताओं से अधिक होती है या कम होती है।

व्यवसाय के अनेक क्षेत्र है, जैसे साहित्यिक, वैज्ञानिक, रचनात्मक, कलात्मक वाणिज्यिक, कृषि आदि। इन्हीं व्यवसायों में से व्यक्ति अपनी इच्छानुसार किसी एक व्यवसाय का चयन करता है परन्तु कई बार ऐसा भी होता है कि वह अपनी इच्छानुसार व्यवसाय नहीं चुन पाता है। उचित व्यवसाय का चयन एक कठिन कार्य है। व्यक्ति की व्यावसायिक आकांक्षा, रूचि, जीवन–शैली, विभिन्न योग्यताओं व क्षमतायें, विभिन्न व्यवसायों के विषय में ज्ञान, वर्तमान समय में समाज की बदलती समाजिक–आर्थिक स्थिति व व्यवसायों की बढ़ती संख्या आदि तत्व व्यक्ति के व्यवसाय चयन को प्रभावित करते हैं। कई बार पारिवारिक और आर्थिक परिस्थितियॉ व्यवसाय चयन करने मे उसके समक्ष आ जाती है। निर्धनता भी उपयुक्त व्यवसाय का चयन न कर पाने का प्रमुख कारण है। जनसंख्या की वृद्धि के कारण बेरोजगारी की समस्या बढ़ गयी है। बेरोजगारी के कारण व्यक्ति को जहॉ भी व्यवसाय मिलता है। चाहे व उसकी रूचि, आकांक्षा या योग्यता के अनुरूप हो या न हो, वह बिना इस तथ्य पर विचार किये उस व्यवसाय को अपना लेता है। वह व्यवसाय उसकी रूचि और आकांक्षा के अनुरूप न होने के कारण

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

व्यक्ति उस व्यवसाय के साथ समायोजन स्थापित नहीं कर पाता है जिसके कारण उसकी मानसिक व शारीरिक क्षमताओं का हनन होता है तथा वह अपने परिवार व राष्ट्रहित में उतना सहयोग नहीं दे पाता, जितना उससे अपेक्षित होता है।

व्यावसायिक आकांक्षा

व्यावसायिक आकांक्षा दो शब्दों–व्यवसाय और आकांक्षा से मिलकर बना है। इसके प्रथम शब्द व्यवसाय का तात्पर्य जीविकोपार्जन के महत्व की वस्तुओं एवं क्रियाओं से है तथा दूसरे शब्द आकांक्षा का अर्थ अभिलाषा या इच्छा से है जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति अपने लक्ष्य को निर्धारित कर उसकी प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील रहता है। इस प्रकार जब किसी व्यक्ति की इच्छा या अभिलाषा किसी जीविकोपार्जन के महत्व की वस्तुओं एवं क्रियाओं के प्रति होती है और उसे प्राप्त करने के लिए वह प्रयत्नशील रहता है तो उसकी यह इच्छा या अभिलाषा व्यावसायिक आकांक्षा कहलाती है।

माध्यमिक शिक्षा, प्राथमिक एवं उच्च शिक्षा के मध्य सेतु का कार्य करती है। इसके बाद या तो बालक उच्च शिक्षा में प्रवेश करता है या पारिवारिक जीवन की शुरूआत करता है। पारिवारिक जीवन के सफल संचालन के लिए बालक में जीवन–कौशलों का होना आवश्यक है। इसीलिए इस स्तर पर व्यावसायिक पाठ्यचर्या के अन्तर्गत विषय चयन एक महत्वपूर्ण कार्य है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए जे0 एस0 ग्रेवाल द्वारा निर्मित व्यावसायिक आकांक्षा मापनी में कुल 8 प्रश्नों के अन्तर्गत 80 व्यवसायों को निम्न आधार पर रखा गया है–

1 आदर्शपूर्ण आकांक्षा स्तर– आदर्श पूर्ण आकांक्षा स्तर का अभिप्राय यह है कि बालक अपनी इच्छानुसार अपनी व्यावसायिक आकांक्षा को प्रकट करता है। बालक के ऊपर कोई दबाव नहीं पड़ता है। बालक को स्वतंत्र होकर व्यवसाय चयन कर चिन्ह लगाने का निर्देश दिया जाता है। इसके अंतर्गत दो प्रकार के व्यवसाय लिये गये हैं–

(अ) अल्पकालिक व्यवसाय– अल्पकालिक व्यवसाय का तात्पर्य कम समय में प्राप्त होने वाले व्यवसाय से है। इसके अंतर्गत बालक विद्यालयी शिक्षा समाप्त करने के पश्चात जिस व्यवसाय की आकांक्षा रखता है उन्हें सम्मिलित किया जाता है। बालक स्वतंत्रतापूर्वक उन्हीं व्यवसायों पर चिन्ह लगाता है।

(ब) दीर्घकालिक व्यवसाय– इसके अंतर्गत अधिक समय व्यतीत हो जाने के पश्चात प्राप्त होने वाले व्यवसायों को सम्मिलित किया जाता है। बालक अपनी विद्यालयी शिक्षा समाप्त करने के पश्चात जिस व्यवसाय को प्राप्त करने की इच्छा प्रकट रखता है उसे उस श्रेणीं में रखा जा सकता है। मापनी में बालक स्वतंत्रतापूर्वक अपनी इच्छानुसार चयनित व्यवसाय पर चिन्ह लगाता है।

2 यथार्थपूर्ण आकांक्षा स्तर– इस प्रकार के व्यवसाय के अंतर्गत उन व्यवसायों को रखा है जिसके विषय में बालक सोचता है कि यह व्यवसाय वास्तविक रूप में उसे लाभप्रद होगा तथा उच्च सामाजिक,

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आर्थिक, परिस्थितियों को प्राप्त करने में सहायक सिद्व होगा। प्रस्तुत परीक्षण में इस प्रकार के व्यवसाय को निश्चयात्मक रूप से प्राप्त हो जाने वाले व्यवसायों के अंतर्गत रखा गया है। इसके अंतर्गत भी दो प्रकार के व्यवसाय लिये गये हैं—

(अ) अल्पकालिक व्यवसाय

(ब) दीर्घकालिक व्यवसाय

किसी बालक को उसकी इच्छित वस्तु प्राप्त नहीं होती है तो वह मानसिक असंतुष्टि का अनुभव करता है और उसका मस्तिष्क हिंसात्मक प्रवृत्तियों की ओर उन्मुख हो जाता है। उसका मानसिक और शारीरिक विकास इससे प्रभावित होता है। इसी प्रकार व्यक्ति को उसकी रूचि के अनुसार व्यवसाय न मिले तो उसका मन व मस्तिष्क कुण्ठित होने लगता है। वह अपनी प्रतिभा के साथ पूर्ण न्याय नहीं कर पाता। परिवार व समाज को उससे जो अपेक्षायें होती हैं वह उनको भी पूरा नहीं कर पाता है। परिणाम स्वरूप कभी—कभी उसमें आपराधिक भावना भी विकसित होने लगती है जो उसका तो अहित करती ही है तथा उसके परिवार, समाज व राष्ट्र को भी नुकसान पहुॅचाती है। प्रस्तुत अध्ययन का महत्व छात्रों, अभिभावकों एवं देश के लिए विशेष रूप से है क्योंकि इस अध्ययन द्वारा प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर बालक को उसकी इच्छानुसार व्यवसाय चुनने में सहायता प्रदान कर सकते हैं।

शोध के उद्देश्य

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं का निम्नलिखित के सन्दर्भ में अध्ययन करना—
    a. अल्पकालिक आदर्शवादी
    b. दीर्घकालिक आदर्शवादी
    c. अल्पकालिक यथार्थवादी
    d. दीर्घकालिक यथार्थवादी
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं का निम्नलिखित के सन्दर्भ में अध्ययन करना—
    a. अल्पकालिक आदर्शवादी
    b. दीर्घकालिक आदर्शवादी
    c. अल्पकालिक यथार्थवादी
    d. दीर्घकालिक यथार्थवादी

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

3 उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्रों एवं छात्राओं तथा शहरी छात्रों एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं में निम्नलिखित के सन्दर्भ में अध्ययन करना –

a. अल्पकालिक आदर्शवादी

b. दीर्घकालिक आदर्शवादी

c. अल्पकालिक यथार्थवादी

d. दीर्घकालिक यथार्थवादी

4 उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी छात्रों तथा ग्रामीण व शहरी छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं का निम्नलिखित के सन्दर्भ में अध्ययन करना–

a. अल्पकालिक आदर्शवादी

b. दीर्घकालिक आदर्शवादी

c. अल्पकालिक यथार्थवादी

d. दीर्घकालिक यथार्थवादी

परिकल्पनायें

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी छात्रों और छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं में निम्नलिखित के सन्दर्भ में कोई सार्थक अन्तर नहीं है–

a. अल्पकालिक आदर्शवादी

b. दीर्घकालिक आदर्शवादी

c. अल्पकालिक यथार्थवादी

d. दीर्घकालिक यथार्थवादी

2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्रों और छात्राओं की व्यावसयिक आकांक्षाओं में निम्नलिखित के सन्दर्भ में कोई सार्थक अन्तर नहीं है–

a. अल्पकालिक आदर्शवादी

b. दीर्घकालिक **आदर्शवादी**

c. अल्पकालिक यथार्थवादी

d. दीर्घकालिक यथार्थवादी

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्रों एवं छात्राओं तथा शहरी छात्रों एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं में निम्नलिखित के सन्दर्भ में कोई सार्थक अन्तर नहीं है–

a. अल्पकालिक आदर्शवादी

b. दीर्घकालिक आदर्शवादी

c. अल्पकालिक यथार्थवादी

d. दीर्घकालिक यथार्थवादी

4 उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी छात्र तथा ग्रामीण व शहरी छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं में निम्नलिखित के सन्दर्भ में कोई सार्थक अन्तर नहीं है–

a. अल्पकालिक आदर्शवादी

b. दीर्घकालिक आदर्शवादी

c. अल्पकालिक यथार्थवादी

d. दीर्घकालिक यथार्थवादी

शोध विधि– प्रस्तुत शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या– प्रस्तुत शोध में जनसंख्या से तात्पर्य उच्चतर माध्यमिक स्तर के शाहजहॉपुर में अध्ययनरत विद्यार्थियों से है।

न्यादर्श तथा न्यादर्श विधि– प्रस्तुत शोधकार्य हेतु शोधार्थी द्विस्तरीय यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया। प्रथम स्तर पर शाहजहॉपुर के छः विद्यालयों को यादृच्छिक विधि से चुना गया। द्वितीय स्तर पर चयनित विद्यालयों से 200 विद्यार्थियों को यादृच्छिक विधि से चयनित किया गया।

विद्यार्थी	छात्र	छात्रायें	कुल विद्यार्थी
शहरी	50	50	100
ग्रामीण	50	50	100
कुल विद्यार्थी	100	100	200

प्रयुक्त उपकरण– प्रस्तुत शोध में ऑकड़ों के संग्रह हेतु जे0एस0 ग्रेवाल द्वारा निर्मित व्यावसायिक आकांक्षा मापनी का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ो का वर्गीकरण एवं विश्लेषण– प्रस्तुत शोध–पत्र में ऑकड़ों का विश्लेषण चार चरणों में व्यावसायिक आकांक्षा परीक्षण पर सत्र 2010–11 में प्राप्त आंकड़ो के आधार पर किया गया है।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रथम चरणः शहरी छात्रों एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं के मध्यमानों का विवरण।

तालिका – 1

व्यावसायिक आकांक्षायें	शहरी छात्र		शहरी छात्रायें		टी0मान
	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	
अल्पकालिक आदर्शवादी	13.5	3.27	13.06	3.28	0.67
दीर्घकालिक आदर्शवादी	14.00	3.50	13.52	3.18	1.07
अल्पकालिक यथार्थवादी	13.46	2.80	12.50	3.37	1.57
दीर्घकालिक यथार्थवादी	14.12	3.22	13.2	2.72	1.56

तालिका–1 के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि शहरी छात्र तथा शहरी छात्राओं में व्यावसायिक आकांक्षा के चारों क्षेत्रों में– अल्पकालिक आदर्शवादी, दीर्घकालिक आदर्शवादी, अल्पकालिक यथार्थवादी एवं दीर्घकालिक यथार्थवादी क्षेत्रों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इसलिये प्रथम शून्य परिकल्पना– ''शहरी छात्रों तथा छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं में कोई सार्थक अन्तर नही है'' पूर्ण रूप से स्वीकृत की जाती है। इस आधार पर कह सकते हैं कि शहरी छात्र तथा शहरी छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

द्वितीय चरणः ग्रामीण छात्रों एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं के मध्यमानों का विवरण

तालिका–2

व्यासायिक आकांक्षायें	ग्रामीण छात्र		ग्रामीण छात्रायें		टी. मान
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	
अल्पकालिक आदर्शवादी	12.70	2.71	11.24	3.47	2.34*
दीर्घकालिक आदर्शवादी	13.74	2.48	12.24	2.97	2.74*
अल्पकालिक यथार्थवादी	13.32	2.41	11.46	3.75	2.79*
दीर्घकालिक यथार्थवादी	14.56	2.56	11.68	2.40	5.69*

***= 0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक**

तालिका–2 के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि ग्रामीण छात्र तथा छात्राओं में व्यावसायिक आकांक्षा के चारों क्षेत्रों– अल्पकालिक आदर्शवादी, दीर्घकालिक आदर्शवादी, अल्पकालिक यथार्थवादी एवं दीर्घकालिक यथार्थवादी क्षेत्रों में सार्थक अन्तर है। इसलिये द्वितीय शून्य परिकल्पना– "ग्रामीण छात्रों तथा छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं में सार्थक अन्तर नहीं है।" को अस्वीकृत किया जाता है और निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते है कि ग्रामीण छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षायें चारों क्षेत्रों में ग्रामीण छात्राओं की अपेक्षा उच्च है।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

तृतीय चरण : ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं तथा शहरी छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं के मध्यमानों का विवरण।

तालिका–3

व्यावसायिक आकांक्षायें	ग्रामीण छात्र व छात्रायें		शहरी छात्र व छात्रायें		टी.मान
	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	मध्मान	प्रामाणिक विचलन	
अल्पकालिक आदर्शवादी	11.97	3.20	13.28	3.28	2.91*
दीर्घकालिक आदर्शवादी	12.99	2.92	13.76	3.35	1.71
अल्पकालिक यथार्थवादी	12.18	3.46	12.98	3.16	1.73
दीर्घकालिक यथार्थवादी	13.12	3.00	13.66	3.02	1.28

***= 0.01 के विश्वास स्तर पर सार्थक**

तालिका–3 के आंकड़ों पर दृष्टिपात करने के पश्चात यह ज्ञात होता है कि ग्रामीण छात्रों एवं छात्राओं तथा शहरी छात्रों एवं छात्राओं में अल्पकालिक आर्दशवादी व्यावसायिक आकांक्षा के क्षेत्र को छोड़कर अन्य सभी दीर्घकालिक आदर्शवादी, अल्पकालिक यथार्थवादी, दीर्घकालिक यथार्थवादी क्षेत्रों के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण व शहरी छात्रों तथा ग्रामीण व शहरी छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं के इन क्षेत्रों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इस प्रकार तृतीय शून्य परिकल्पना– ''ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं एवं शहरी छात्र एवं छात्राओं की व्यावयायिक आकांक्षाओं में कोई सार्थक अन्तर नही है।'' आंशिक रूप से स्वीकृत की जाती है।

चतुर्थ चरणः ग्रामीण एवं शहरी छात्रों तथा ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं के मध्यमानों का विवरण।

तालिका–4

व्यावसायिक आकांक्षायें	ग्रामीण व शहरी छात्र		ग्रामीण व शहरी छात्रायें		टी.मान
	मध्यमान	प्रामाणित विचलन	मध्मान	प्रामाणिक विचलन	
अल्पकालिक आदर्शवादी	13.10	3.03	12.15	3.50	2.05*
दीर्घकालिक आदर्शवादी	13.87	3.11	12.82	3.12	2.38*
अल्पकालिक यथार्थवादी	13.39	2.64	12.03	3.60	3.04*
दीर्घकालिक यथार्थवादी	14.34	2.96	12.47	7.79	4.60*

*** = 0.05 के विश्वास स्तर पर सार्थक**

तालिका–4 में प्रदर्शित आंकड़ों के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि ग्रामीण व शहरी छात्रों तथा ग्रामीण व शहरी छात्राओं की अल्पकालिक आदर्शवादी, दीर्घकालिक आदर्शवादी, अल्पकालिक यर्थाथवादी तथा दीर्घकालिक यथार्थवादी व्यावसायिक आकांक्षाओं के क्षेत्रों में सार्थक अन्तर पाया गया। इसलिये चतुर्थ शून्य परिकल्पना ''ग्रामीण एवं शहरी छात्रों तथा ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

व्यावसायिक आकांक्षाओं में सार्थक अन्तर है'' को अस्वीकृत किया जाता है और यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि ग्रामीण व शहरी छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षायें ग्रामीण व शहरी छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं की अपेक्षा उच्च है।

निष्कर्ष– शून्य परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु आंकड़ो की सांख्यिकीय प्रक्रिया के उपरान्त उनकी विश्लेषण तथा व्याख्या के आधार पर शहरी तथा ग्रामीण छात्रों एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं से सम्बन्धित जो निष्कर्ष प्राप्त हुए है वे इस प्रकार हैं–

प्रथम शून्य परिकल्पना ''शहरी छात्रों तथा शहरी छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नही है'' पूर्ण रूप से स्वीकृत की जाती है। शहरी छा़त्र व शहरी छात्राओं के व्यावसायिक आकांक्षा के अल्पकालिक आदर्शवादी, दीर्घकालिक आदर्शवादी, अल्पकालिक यथार्थवादी तथा दीर्घकालिक यथार्थवादी सभी क्षेत्रों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। शहरी छात्रों के व्यावसायिक आकांक्षा मध्यमान प्राप्तांक तथा शहरी छात्राओं के व्यावसायिक आकांक्षा मध्यमान प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः शहरी छात्राओं और शहरी छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षाओं में सार्थक अन्तर नहीं है।

द्वितीय शून्य परिकल्पना– ''ग्रामीण छात्रों और ग्रामीण छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' पूर्ण रूप से अस्वीकृत की जाती है। ग्रामीण छात्र व ग्रामीण छात्राओं के व्यावसायिक आकांक्षा के अल्पकालिक आदर्शवादी, दीर्घकालिक आदर्शवादी, अल्पकालिक यथार्थवादी तथा दीर्घकालिक यथार्थवादी सभी क्षेत्रों में सार्थक अन्तर पाया गया। ग्रामीण छात्रों के व्यावसायिक आकांक्षा मध्यमान प्राप्तांक तथा ग्रामीण छात्राओं के व्यावसायिक आकांक्षाओं के मध्यमान प्राप्तांकों से अधिक है। अतः ग्रामीण छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षा ग्रामीण छात्राओं की अपेक्षा उच्च पायी गई।

तृतीय शून्य परिकल्पना– '' उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्रों एवं छात्राओं तथा शहरी छात्रों एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' आशिंक रूप से स्वीकृत की जाती है। ग्रामीण छात्रों एवं छात्राओं तथा शहरी छात्रों एवं छात्राओं मे दीर्घकालिक आदर्शवादी, अल्पकालिक यथार्थवादी तथा दीर्घकालिक यथार्थवादी सभी क्षेत्रों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। व्यावसायिक आकांक्षा के अल्पकालिक आदर्शवादी क्षेत्र में शहरी छात्रों एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा के मध्यमान का प्राप्तांक अधिक है। अतः अल्पकालिक आदर्शवादी व्यावसायिक आकांक्षा क्षेत्र में शहरी छात्रों एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा ग्रामीण छात्रों एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा की अपेक्षा उच्च पायी गयी ।

चतुर्थ शून्य परिकल्पना– '' उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी छात्रों तथा ग्रामीण व शहरी छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' पूर्ण रूप से अस्वीकृत की जाती

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

है। ग्रामीण व शहरी छात्रों एवं ग्रामीण व शहरी छात्राओं मे अल्पकालिक आदर्शवादी, दीर्घकालिक आदर्शवादी, अल्पकालिक यथार्थवादी तथा दीर्घकालिक यथार्थवादी सभी क्षेत्रों में सार्थक अन्तर पाया गया है। व्यावसायिक आकांक्षा के अल्पकालिक आदर्शवादी, दीर्घकालिक आदर्शवादी, अल्पकालिक यथार्थवादी तथा दीर्घकालिक यथार्थवादी सभी क्षेत्रों क्षेत्र में ग्रामीण व शहरी छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षा का मध्यमान अधिक है। अतः अल्पकालिक आदर्शवादी व्यावसायिक आकांक्षा क्षेत्र में ग्रामीण व शहरी छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षा ग्रामीण व शहरी छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा की अपेक्षा उच्च पायी गयी।

इस अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि क्षेत्र और लिंग के आधार पर वर्गीकृत विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं में सार्थक अन्तर है अथवा नहीं। इस अध्ययन के द्वारा प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर बालकों को उनकी व्यावसायिक आकांक्षा के अनुसार व्यवसाय चुनने हेतु उचित निर्देशन व परामर्श दिया जा सकता है। उनके लिए विशिष्ट प्रकार की शिक्षण व्यवस्था की जा सकती है ताकि उनमें व्यावसायिक कुशलता का विकास हो सके। वह अपनी आकांक्षा के अनुसार चुने गये व्यवसाय में उचित प्रकार से समायोजन स्थापित करके अपनी प्रतिभा को पूर्ण रूप से विकसित होने का अवसर प्राप्त कर सकें।

संदर्भ सूची

Chauhan, S.S. (1982). Social Psychological Correlates of Vocational Aspiration. Agra: National Psychological corporation Bhargavan Bhawan.

Grewal, J.S. (1980). Vocation Environment and Education and Occupational Choice. Agra : National Psychological Corporation.

Pathak, A.(1995). A Comperative Study of Vocational Aspiration of Normal and Handicapped Children, unpublished, M.Ed. Disseration.

Sodhi, J.S. (1988). Vocational Interests and Occuptional Choice of Adolescent girls of Chandigarh. Indian Education Review.

Kumar, S. (2010). Uchchatar madhyamik star ke vidyarthiyon ki vyavsayik akankshaon ka adhyayan. An unpublished Dessertation. Bareilly: IASE.

Bamagond, A. V. (2006). Psychological correlates of vocational aspirations of secondary school students. Retrieved from the website http://hdl.handle.net/10603/95430 on the date 01/01/2022.

Nutan, K. (1999). A study of Vocational Aspiration of High School Students. an unpublished Dessertation. Bareilly: IASE.

Grewal, J.S. (1971). Educational choices and vocational preferences of secondary school students in relation to environmental process. Unpublished Ph.D. Thesis, Vikram University.

Best. J.W. (1963). Ressearch in education. New Delhi: Prentice Hall.

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

Garrett, H. E. (1985). Statistics in Psychology and Education. Professor Eneritus of Psychology, Eleventh, Indian. Reprint Columbia University.

Oberao, S. C. (1993). Educational & Vocational Guidance & Conselling. Meerut :Egla Book International.

Begum, P. (2014). Effect of information technology, intelligence, achievement motivation and occupational aspiration on vocational interest of secondary school students of Aligarh district. Retrieved from the website http://hdl.handle.net/10603/166132 on the date 01/01/2022.

Cheema, G. K. (2017). Emotional intelligence and academic performance in relation to occupational aspirations among government model schools students in Chandigarh. Retrieved from the website http://hdl.handle.net/10603/251228 on the date 01/01/2022.

Sangma, N. M. (2013). A study of educational and occupational aspirations of secondary students in relation to socio-economic status in Garo hills. Retrieved from the website http://hdl.handle.net/10603/165855 on the date 01/01/2022.

Kumar, S. (2000). Vocational Maturity in 10+2 students of academic and vocational streams in relation to personality, achievement, motivation, socio-economic status. Ph.D. Thesis Panjab University, Chandigarh. .

Govt. of India (2020). National Education Policy. New Delhi: Ministry of Education.

Bhatnagar, S. S. (1982). Educational Psychology. Meerut : Surya Publication.

Grewal, J.S. (1971). Educational choices and vocational preferences of secondary school students in relation to environmental process. Unpublished Ph.D. Thesis, Vikram University.

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies